आख़िर क्यों हो रही हैं मुस्लिम लड़कियाँ इरतिदाद के फ़ितने की शिकार?

हव्वा की बेटियाँ

और इरतिदाद का फ़ितना

✍ तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी

तहसीनी फ़ाउन्डेशन

बरेली शरीफ़

/TehseeniFoundation

आख़िर क्यों हो रही हैं मुस्लिम लड़कियाँ इरतिदाद के फ़ितने की शिकार?

हव्वा की बेटियाँ

और इरतिदाद का फ़ितना

✍ तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी

तहसीनी फ़ाउन्डेशन
बरेली शरीफ़
/TehseeniFoundation

आये दिन मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से मुस्लिम लड़कियों के इस्लाम से फिरने और ग़ैर मुस्लिम लड़को से शादी करने के वाकिआ़त सामने आ रहे हैं जो न सिर्फ़ हमारे मुआ़शरे में बेचैनी का सबब है बल्कि हमारी सोई हुई ग़ैरत पर भी एक ज़ोरदार तमाचा है। और इस्लाम से बेवफ़ाई के बाद इन लड़कियों का अन्जाम किया होता है इसकी ख़बरे भी आये दिन आती रहती हैं, लेकिन फिर भी इश्क़ में बदमस्त हमारी क़ौम की लड़कियाँ इन सब से इबरत हासिल करने के बजाए चार दिन के प्यार के चक्कर में अपनी दुनिया और आख़िरत दोनों बरबाद करने पर आमादा हैं।

मुल्क की शिद्‌दत पसन्द तंजीमें पूरी प्लानिंग के साथ मुस्लिम लड़कियों को अपने जाल में फंसाकर उनके ईमान पर डाका डालने में लगी हुई हैं जिससे उनकी ज़िन्दगी भी बरबाद कर दी जाये और आखिरत भी। इतना सब होने के बाद भी हम हैं कि ग़फ़लत की नींद में इतने बदमस्त हैं कि हमें कुछ नज़र ही नहीं आ रहा है और न हम अपने क़ौम की लड़कियों को इन सब से बचाने की कोई कोशिश करते नज़र आ रहे हैं।

इरतिदाद क्या है?

इरतिदाद का मतलब है दीन से फिरना यानी इस्लाम मज़हब छोड़ कर कोई दूसर मज़हब इख़्तियार कर लेना। जो शख़्स मुसलमान हो फिर वह इस्लाम छोड़कर काफ़िर हो जाये तो ऐसे शख़्स को मुर्तद कहते हैं।

आख़िर ऐसा क्यों?

एक सवाल यह भी पैदा होता हैं कि जिस मज़हब ने औरतों की

हिफ़ाज़त की हो और जिस मज़हब ने लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न किये जाने से रोका हो उसी मज़हब की लड़कियां ग़ैरो के जाल में क्यों फ़ंस रही हैं? क्या वजह है कि वह चार दिन के प्यार के चक्कर में अपना मज़हब तक छोड़ने को तैयार हो जाती हैं। अगर इस पर ग़ौर किया जाये तो कई सबब आपके सामने आयेंगे जिनकी वजह से ऐसा हो रहा है। उनमें से कुछ अहम सबब हम यहां बयान कर रहे हैं।

1. मग़रबी तहज़ीब (Western Culture) से महब्बतः—

आज हमारी क़ौम मग़रबी तहज़ीब को इतना अपना चुकी है कि उसने अपना वक़ार खो दिया है। जिस क़ौम की औरतें, बेटियां बग़ैर किसी सख़्त ज़रूरत के घर से बाहर नहीं जाया करती थीं आज वह खुले आम बाज़ारों की ज़ीनत बनी हुई हैं। जिस क़ौम की लड़कियाँ अपने घर के मर्दों से बात करने में शर्म महसूस करती थीं आज वह क्लासमेट और ब्वायफ्रैन्ड के नाम पर ग़ैर लड़को के साथ घूमती हुई नज़र आ रही हैं। और अफ़सोस इस बात पर भी कि इस पर उनको ज़रा सी भी शर्म महसूस नहीं होती बल्कि अपने लिये फ़ख़्र समझती हैं और उनके घर वाले सब कुछ देखते हुये भी अनजान बने हुये हैं। यही वजह है कि वह आज़ाद होकर किसी भी लड़के के साथ कहीं भी आती जाती रहती हैं फिर उसका नतीजा जो होता है वह आपके सामने है।

2. मख़्लूत निज़ामे तालीम (Co-Education System) :–

याद रहे कि मज़हबे इस्लाम किसी भी जायज़ तालीम हासिल करने से नहीं रोकता जो जायज़ तरीके से हासिल की जाये। हां उस तालीम को हासिल करने से रोकता है जिससे बुराई को बढ़ावा मिले और जिससे बेहयाई आम हो। मौजूदा मख़्लूत निज़ामे तालीम ने हमारे मुआशरे पर बहुत बुरा असर डाला है और इसके ज़रिये बहुत सी बुराइयाँ हमारे मुआशरे में पैदा हो गई हैं।

यही मख़्लूत निज़ामे तालीम इरतिदाद जैसे बड़े फ़ितने का एक प्लेटफार्म है यहां पर ग़ैर मुस्लिम लड़के तालीम के नाम पर, मदद के नाम पर मुस्लिम लड़कियों के क़रीब आते हैं और फिर यह करीब आते–आते उन्हें अपने जाल में फ़साकर उनकी ज़िन्दगी और आख़िरत दोनों बरबाद कर देते हैं।

فاؤنڈیشن تحسینی
Tehseeni Foundation

3. दीनी तालीम से दूरी :–

आज हमारा मुआशरा दीन और दीनी तालीम से दूर होता जा रहा है, आज हमें यह सही से पता ही नहीं कि हमारी पहचान क्या है? आज हमें यह शऊर ही नहीं कि इस्लाम कितनी अज़ीम दौलत है? आज हमारी क़ौम की लड़कियाँ इस बात से बेख़बर हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के मबऊस होने से पहले लड़कियों के साथ क्या सुलूक किया जाता था? आज हमारे क़ौम की लड़कियों को यह शऊर ही नहीं कि इस्लाम ने उनको किस तरह तहफ़्फ़ुज़ (Security) फ़राहम किया है? आज हमारी क़ौम की लड़कियाँ इस बात से

अनजान है कि इस्लाम से फिरने वालों को अन्जाम क्या होता है? आज वह यह भूल गईं है कि जो इस्लामी तहज़ीब को बुरा कहते हैं उनके यहाँ औरतों की क्या इज़्जत है? दुनिया की क़ौमों ने तालीम और तहज़ीब क़ौमे मुस्लिम ही से पाई है लेकिन अफ़सोस आज हमारी क़ौम अपनी तहज़ीब भूल चुकी है।

4. टी वी सीरियल्स :—

टी वी सीरियल्स ने जिस तरह हमारे घरों को बरबाद करा है उससे सभी लोग अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। इन सीरियल्स के ज़रिये दुनिया के सामने इस्लामी तहज़ीब को इस तरह से पेश किया जाता है कि लोग इस्लामी तहज़ीब को बोझ समझने लगें और इसके बर ख़िलाफ़ मग़रबी तहज़ीब को बढ़ावा दिया जाता है। हमारी क़ौम की लड़कियां जिनका शायद ही कोई सीरियल छुटता हो वह इन्ही सीरियल्स को देखकर इनकी तक़लीद करती हुई नज़र आती हैं। टीवी सीरियल्स के ज़रिये किस तरह बेहयाई और बुराई को बढ़ावा दिया जाता है यह सब जानते हुये भी आज हमारे घरों में यह सब देखे जाते हैं।

5. माँ बाप का अंधा यक़ीन :—

मुआ़शरे के जो हालात हैं और जिस तरह यह इश्क़ और इरतिदाद का फ़ितना तेज़ी से बढ़ रहा हैं उसमें माँ बाप के अपने बच्चों पर अंधे और बहुत ज़्यादा यक़ीन का भी काफ़ी दख़ल है। देखा गया है कि जब किसी माँ बाप से उनकी बच्ची के बारे में शिकायत की गई तो सीधा सा वह यह कहते हैं कि नहीं हमारी बच्ची ऐसी नहीं। होना तो यह चाहिये था कि वह इस शिकायत पर ग़ौर करते और अपनी बच्ची को समझाते

ताकि इस तरह के किसी भी मुआमले को बढ़ने से रोका जा सकता लेकिन बजाए इसके वह इतने यक़ीन के साथ कह देते हैं कि नहीं हमारी बच्ची ऐसी नहीं है और फिर एक दिन ऐसा आता है कि वह बच्ची इसी चीज़ का फ़ायदा उठा कर ग़ैरों के साथ चली जाती है।

6. माँ बाप की ग़फलत / लापरवाही :–

अपने बच्चों के साथ माँ बाप की लापरवाही ने भी मुआशरे का बेड़ा डुबोने में अहम किरदार अदा किया है। उनकी बच्ची कब कॉलेज जा रही है? या कॉलेज के बहाने से कहाँ जा रही है? किसके साथ कॉलेज जा रही है? कोचिंग छोड़कर कहीं और तो नहीं जा रही है? घर से निकलते ही मोबाइल पर बात तो नहीं शुरु हो जा रही है? मोबाइल पर किस–किस से बात हो रही है? व्हाट्सएप पर किस–किस से बात हो रही है? किसके साथ फोटो शेयर की जा रही हैं? यह और इस तरह के कई और सवाल हैं जिनसे माँ बाप बिल्कुल बेपरवाह है। आज अकसर यह देखा जा रहा है कि हमारे मुआशरे की लड़कियाँ जैसे ही घर से बाहर से निकल कर कुछ आगे पहुचती है तो उनका मोबाइल कान पर लग जाता है, कोंचिग से निकल कर बाहर कुछ देर कोंचिंग में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों से हंसी मज़ाक होती है। कुछ को कोई उनका फ्रेन्ड ही घर से कुछ दूर तक छोड़ने आता है। कभी शॉपिंग के नाम पर कभी एक्स्ट्रा क्लास के नाम पर पार्क में जाकर तफ़रीह की जाती है। इस तरह की न जाने कितनी बाते हैं जिनको लेकर माँ बाप न सिर्फ लापरवाही बरत रहे हैं बल्कि कुछ तो सब कुछ

जानते हुये अनजान बने हुये हैं।

7. बुरे फ्रैन्डस :—

मज़हबे इस्लाम में ब्वायफ्रैन्ड का कोई तसव्वुर ही नहीं, ऐसा रिश्ता सिवाय हराम के कुछ नहीं। हाँ मुस्लिम लड़की किसी सही दीनदार मुस्लिम लड़की को अपनी फ्रैन्ड बना ले तो कोई हर्ज नहीं बल्कि नेक दोस्त होना यह अच्छी बात है। लेकिन अगर हम मौजूदा मुआ़शरे पर ग़ौर करें तो यह बात सामने आती है कि इरतिदाद जैसे संगीन मुआमलात में लड़की की ग़ैर मज़हब फ्रैन्ड का भी अहम किरदार रहा है। लड़की को ग़ैर मुस्लिम लड़के से क़रीब कराने और लड़की को उसके मज़हब के तअ़ल्लुक से बरग़लाने में उसने ही अहम किरदार अदा किया है।

यह चन्द सबब हम ने बयान किये है इसके अलावा और भी असबाब हैं जिन पर ग़ौर करने की ज़रूरत है।

Tehseeni Foundation

इस फ़ितने को कैसे रोका जाये?

मज़हबे इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जिसने ज़िनदगी के हर शोबे में रहनुमाई की है। इस्लाम के मानने वालों ने हर फ़ितने का सर कुचलने का काम किया है। आज ज़रूरत है इस बात की कि इरतिदाद जैसे बड़े फितने की रोक थाम के लिये हम मैदाने अमल में आयें और हम में से हर एक को ज़मीनी सतह पर काम करना होगा जिससे हम अपनी क़ौम की बेटियों के दिलों में इस्लाम की महब्बत का ऐसे जज़्बा पैदा करदें कि वह

इस्लाम के हर हुक्म को बगैर किसी 'क्यों?' और 'कैसे?' मानने को न सिर्फ तैयार हो जायें बल्कि उसमें अपनी सआ़दत जानें। इसके लिये क्या करा जा सकता है इस तअ़ल्लुक से चन्द बातें पेश की जाती हैं।

1. घरों में दीनी माहौल क़ायम करें :–

इन्सान जहाँ से सबसे ज़्यादा सीखता है वह उसका घर है। मुआ़शरे की बेहतरी के लिये सबसे पहले हमें अपने घरों का माहौल इस्लामी बनाना होगा। अपने बच्चों को रोज़ाना कुछ न कुछ दीन के बारे में बतायें उनके दिलों में इस्लाम की महब्बत नबी ए पाक सल्लल्लहु तआला अलैहि वसल्लम का इश्क पैदा करें और उन्हें यह बतायें कि दीने इस्लाम ही के दामन में दुनिया और आख़िरत की कामयाबी है। साथ ही उनके अन्दर अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ पैदा करें, नेकियां के सवाब, बुराइयों के वबाल, नाजायज़ व हराम कामों के अज़ाब के तअल्लुक से बतायें। अपनी बच्चियों को पाकदामनी का दर्स दें। ग़ैरों से मेलजोल के नुक़सानात के बारे में बतायें। पर्दे की अज़्मत के बारे में बताते हुये बेपर्दगी के अज़ाब से डरायें। उनके ज़हन में यह बात डालें कि उनकी भलाई चाहने वाले उनके माँ बाप और भाई बहन ही हैं इसके अलावा जो ग़ैर आप से आपके लिये अच्छा होने का दावा कर रहा है बस वह अपने बुरे मक़सद को हासिल करने के लिये कर रहा है, हक़ीकत में वह तुम्हारी भलाई चाहने वाला नहीं बल्कि वह तुम्हारा दुश्मन है।

2. तालीम दिलाने में निगरानी :–

माँ बाप अपनी बच्ची को जहाँ भी तालीम के लिये भेज रहे हैं वहाँ इस बात का खास ख़्याल रखें कि उनकी वहां किसी गैर लड़को से मेल जोल होने का तो कोई रास्ता नहीं है। अगर ऐसा हो तो वहाँ तालीम न दिलाये बाल्कि एसी जगह तालीम दिलायें जहाँ का माहौल ठीक हो। कोशिश करें कि ज़्यादातर खुद ही अपनी बच्ची को कॉलेज छोड़कर आयें और खुद ही लेकर आयें। या बच्ची के भाई इस काम को करें। वक़्त–वक़्त पर बच्ची के कॉलेज के अन्दर के मुआमलात पर भी नज़र डालते रहें। अपनी बच्ची की फ्रैन्ड्स को भी देखे कि वह किस तरह की है? अगर बच्ची की कोई फ्रैन्ड ठीक न हो तो अपनी बच्ची को उससे दूर रखें। बच्ची की कोचिंग का माहौल भी देखें, वहाँ पर आपकी बच्ची कैसे रहती है इस पर भी नज़र रखें।

3. मोबाइल देखते रहें :–

अगर आप ने अपनी बच्ची को उसका अलग मोबाइल दे रखा है तो सबसे पहले उसको इस बात की सख़्त ताकीद करें कि उसका नम्बर किसी ग़ैर के पास न जाने पाये। वक़्त वक़्त पर उसके मोबाइल को देखते रहें। इस बात पर नज़र रखें कि किस–किस से बात हो रही है। कुछ लड़किया लड़को के मोबाइल नम्बर लड़की के नाम से अपने फ़ोन में सेव कर लेती हैं ताकि कोई पहचाने नही तो आप इस पर भी नज़र रखें जिस नम्बर पर अक्सर बात होती हो या बहुत देर तक बात होती हो उसपर आप वक्त वक्त पर खुद भी कॉल करके देखते रहें।

अकेले में ज़्यादा मोबाइल न चलाने दें। सोशल मीडिया पर भी नज़र रखें कि कहीं आपकी बच्ची फेसबुक, इन्स्टाग्राम, वहाट्सएप पर तो किसी ग़ैर से बात नहीं कर रही है। और भी जहाँ जहाँ ज़रूरत हो आप अपने बच्चों का फ़ोन चैक करते रहें। और उन्हें यह यक़ीन दिलायें कि हम उनका मोबाइल उनकी भलाई के लिये चैक कर रहे हैं।

4. बच्चियों को दीनी तालीम दिलायें :–

दीनी तालीम से दूरी का नतीजा है कि क़ौम की लड़कियाँ इस झूठे प्यार के चक्कर में अपने मज़हब को छोड़कर अपनी दुनिया और आख़िरत दोनो बरबाद कर रही हैं। अपनी बच्चियों को इस फ़ितने से दूर रखने के लिये ज़रूरी है कि उन्हें दीनी तालीम दिलायें ताकि उनके दिलों में इस्लाम की हक़कानियत का चिराग़ रौशन हो और वह यह जान सके कि इस्लाम से फिरने का अन्जाम कितना बुरा है। दीनी तालीम ही से उनके अन्दर पर्दे की अज़मत और बेपदर्गी से नफ़रत पैदा होगी। दीनी तालीम से ही उनके अन्दर यह शऊर आयेगा कि ग़ैरो से मेल जोल रख़ना कितना भयानक है। जब दीन सीखेंगी तो वह यह भी जान जायेंगी कि इस्लाम ने पर्दे का हुक्म देकर उनको कैद नहीं किया है बल्कि उनकी हिफ़ाज़त की है। इसके अलावा ग़ैरों की तरफ़ से फैलाये जा रहे प्रोपेगंन्डे को भी समझ जायेंगी जिसमे यह कहा जाता है कि इस्लाम में औरतों को परेशान किया जाता है।

5. लड़कियों के लिये दीनी प्रोग्राम्स :– लड़कियों की

दीनी तरबियत के लिये वक़्त वक़्त पर दीनी तरबियती प्रोग्राम किये जायें जिसमें उनके दिलों में दीनी जज़्बा बेदार किया जाये और इस्लामी अहकाम उन तक पहुंचाये जायें। साथ ही इस्लाम की उन शहज़ादियों की सीरत से भी वाक़िफ़ कराया जाये जिन्होने इस्लाम की तबलीग़ो इशाअत में अहम किरदार अदा किया है। इन दीनी तर्बियती प्रोग्राम के लिये शहरी सतह पर या मोहल्ला सतह पर हफ़तावारी या माहाना दीनी इजतेमा रखे जा सकते हैं। इस काम के लिये सोशल मीडिया का भी सहारा लिया जा सकता हैं क्योंकि आज कल कॉलेज और यूनीवर्सिटी की ज़्यादातर लड़कियाँ किसी न किसी तरह सोशल मीडिया से जुड़ी हुई हैं। उन्हें सोशल मीडिया के ज़रिये इसलामी अहकाम के बारे में बताया जाये और उनके अन्दर दीनी जज़्बा बेदार किया जाये।

6. बेहतर तरीक़े से समझाएं :–

अगर अपनी क़ौम की बेटियों को ज़रा सा भी बहकता हुआ देखें तो उन्हें बड़े ही प्यार से बहुत ही अच्छे तरीके पर समझाएं और उन्हे उनके इस बुरे काम के अन्जाम से डराते हुए इस काम से दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करें। याद रहे कि समझाने में नरमी बरतें।

7. बच्चियों की ज़रुरत का ख़्याल रखा जाये :–

अगर बच्ची स्कूल या कॉलेज में पढ़ रही है तो उसकी तालीमी ज़रुरतों का ख़्याल रखते हुये बाप या भाई उसकी ज़रुरतों को पूरा करें उसको बुक शॉप, मोबाइल शॉप वग़ैरह पर न भेजते

हुये ख़ुद जाकर उसकी तालीमी ज़रूरतों को पूरा करें। देखा गया है कि बहुत सारी लड़कियां पहले अपनी तालीमी मदद के लिये ग़ैर मुस्लिम लड़कों से बात करती है और फिर उनके जाल में फंस जाती हैं।

इस्लाम से दूर जाने वाली लड़कियों का अन्जाम

हम यहाँ पर हाल ही के 3 वाक़िआत बता रहे हैं जिसमें कौम की लड़कियाँ इस फ़ितने का शिकार होकर अपनी जान गंवा बैंठी।

वाकिआ–1:

उत्तर प्रदेश के अयोध्या ज़िले के थाना खंडासा इलाके के मटेरा गांव की रुबीना की हत्या कर दी गई। बताया जाता है कि रुबीना ने 1 साल पहले मटेरा गांव के बाबूलाल गुप्ता के साथ घर से भागकर शादी की थी। जांच में पता चला है कि बाबू लाल और रुबीना के बीच आपसी झगड़ा हुआ था, जिसमें उससे दहेज में मोटरसाइकिल के दबाव बनाने की बात सामने आई है। इस दौरान पत्नी पर धारदार औजार से वार किया गया, जिससे उसकी मौत हो गई।

(सोर्स: नवभारत टाइम्स 29, जुलाई 2022)

वाकिआ–2:

मालवा (मध्य प्रदेश) में रेशमा, पति को छोड़ नितिन बावरे के साथ में रहती थी। मामूली विवाद पर फावड़े से काट कर बुरी

तरह मार डाला गया। रेशमा की खून से लथपथ लाश बरामद हुई। बताया जा रहा है कि नितिन ने कुछ दिन बाद काम करना छोड़ दिया था, ओर 28 फ़रवरी को दोनो में झगड़ा हुआ और नितिन ने फाबड़े से सिर काट कर हत्या कर दी।

(एबीपी न्यूज़, 28 फ़रवरी 2023)

वाकिआ–3:

उत्तर प्रदेशा शामली के बाबरी इलाके में नईमा राशिद की हत्या उसके आशिक नें कर दी, हत्या के बाद उसकी लाश को कुएं में फेंक दिया। बताया जा रहा है कि फ़तेहपुर की रहने वाली नईमा राशिद 2 मार्च को अपने आशिक बंतीखेड़ा के रहने वाले आशु के साथ चली गई थी। 29 मार्च को दोनों के बीच झागड़ा हुआ और आशु ने दरांती से नईमा को मार डाला उसके बाद उसकी लाश को कुएं में फेंक दिया और ऊपर से नमक डाल दिया।

(सोर्स: अमर उजाला, 3 अप्रैल 2023)

इस तरह के न जाने कितने वाक़िआत हैं जो आये दिन ख़बरों में आते रहते हैं। हमारी क़ौम की बेटियाँ इन वाकिआत को पढ़ें और इबरत हासिल करें कि इस्लाम से बेवफ़ाई का अन्जाम क्या होता है।

क़ौम की बेटियों को पैग़ाम

इस्लाम की प्यारी शहज़ादियों शायद तुम अपनी तारीख़ भूल रही हो ज़रा तारीख़ के वरक़ पलट कर देखो तुम्हारी क्या अज़मत है। तुम तो वह हो जिन्होंने सख़्त से सख़्त वक़्त में भी इस्लाम के दामन को नहीं छूटने दिया है। तुम तो वह हो जिन्होनें इस्लाम के लिये अपने बाप, बेटो, भाइयों और शौहर को कुर्बान कर दिया है। ज़रा तुम करबला के वाकिए को पढ़ो, क्या तुम ने हज़रत ज़ैनब और हज़रत सकीना की तारीख़ नहीं पढ़ी? अपनी तारीख़ देखो और अपनी अज़मत को पहचानो। तुम तो हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हा की कनीज़ हो, ज़रा हज़रत फ़ातिमा का किरदार देखो आप ने एक माँ, एक बेटी और एक बीवी की हैसियत से क्या किरदार अदा किया है? आप हर किरदार में अपनी मिसाल आप है। हज़रत फ़ातिमा का किरदार अपनाकर ही तुम अपनी दुनिया और आख़िरत संवार सकती हो।

आज तुम्हें क्या हो गया है जिस बाप ने अपने खून पसीने की कमाई से तुम्हें पाला, तुम्हारे अरमान पुरे किये, जिस माँ ने दूध की शक्ल में अपना खून पिलाकर तुम्हे बड़ा किया और जो भाई हमेशा इसी फ़िक्र में रहा कि कोई मेरी बहन की तरफ़ आँख उठाकर न देखे, आज यह सब लोग तुम्हरी नज़र में दुश्मन हो गये हैं। ज़रा सोचो तो सही इस 4 दिन के प्यार में तुम क्या से क्या कर रही हो। याद रखो! ईमान सबसे बड़ी दौलत है, अगर यह दौलत अल्लाह न करे चली गई तो फ़िर न दुनिया में कुछ हाथ आयेगा और न आखिरत में कुछ हिस्सा होगा, अल्लाह न करे अगर ईमान हाथ से चला गया तो हमेशा

हमेश की जहन्नम में डाल दिया जायेगा। क्या तुम्हारा यह नाज़ुक जिस्म जहन्नम की आग को बरदाश्त कर पायेगा? ख़ुदारा अपने हाल पर रहम करो, इस्लाम के दामन में पुरी तरह से आ जाओ। इस्लाम ही में तुम्हारे लिये भलाई है वर्ना याद रखो कि जो आज तुम से झूठी महब्बत दिखा रहें है कुछ दिनों के बाद तुम्हारे जिस्म से खेलकर तुम्हें बेच देंगे या तुम्हें भगा दिया जायेगा फिर तुम दर दर भटकती फिरोगी।

ऐ मेरी क़ौम की बेटियों मज़हबे इस्लाम ने पर्दे का हुक्म देकर, ग़ैर महरमों से दूर रहने का हुक्म देकर तुम्हें क़ैद नहीं किया हैं बल्कि तुम्हारी हिफ़ाज़त की है। वर्ना उन क़ौमों का हाल देखो जो मग़रबी तहज़ीब में डूबी हुई हैं वहाँ औरतों को बस खिलौना बना कर रख दिया गया है। मज़हबे इस्लाम ने ही तुम्हें रहमत कहा है और तुम्हारी अच्छी तर्बियत पर तुम्हारे वालिदैन को जन्नत की ख़ुश्ख़बरी दी है। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल की वजह से तुम्हारे वालिदैन भी अज़ाब में मुब्तला न होजायें। भलाई इसी में हैं कि इस्लामी अहकाम पर अमल करके अपनी दुनिया और आख़िरत संवार लो। वर्ना याद रखो एक दिन मौत आनी है और हर एक काम का हमें अल्लाह की बारगाह में हिसाब देना है।

तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी
23 रमज़ानुल मुबारक 1444 हिजरी
मुताबिक 15 अर्पेल 2023 बरोज़ इतवार

तुम भी मारी जाओगी

पहले चाहत फिर निगाहों से उतारी जाओगी
आबरू भी जाएगी और तुम भी मारी जाओगी।

तुम फिरोगी दरबदर रुसवाई और ज़िल्लत के साथ
बेटियो! जब छोड़कर निस्बत हमारी जाओगी।

यह तो एक साज़िश है वरना तुम नहीं उनको कुबूल
कल वही नफरत करेंगे आज प्यारी जाओगी।

जिस घड़ी दिल भर गया कोठे पे बेचेंगे तुम्हें
दाग लेकर होगी वापस और कुंवारी जाओगी।

जिसके दम पर घर से निकलीं कल वह जब देगा फरेब
सोच लो किस सम्त फिर तुम पांव भारी जाओगी।

इज्जत व अजमत गवाँ कर मुंह दिखाओगी किसे करते—करते
दुनिया से तुम आह व् जारी जाओगी।

उतरेगा थोड़े दिनों में ही जवानी का नशा
जुल्म की आगोश में जब बारी बारी जाओगी।

कोई मजहब दे न पाएगा तुम्हें ऐसा हिसार
छोड़कर इस्लाम की जब पासदारी जाओगी।

है शरीयत ही तुम्हारी पसबाँ ऐ बेटियो!
दामन ए इस्लाम में ही तुम संवारी जाओगी।

प्यारी बहनो इफ्फत व शर्म व हया अपनाओ तो
देखना फिर नूर ए हक से तुम निखारी जाओगी।

तुमको कुछ शिकवा था तो अपनों से ही कर देती बयां
इतने पर क्या दूसरों की तुम अटारी जाओगी।

आह दोजख को खरीदा तुमने ईमां बेच कर
आह अब रोज़े जज़ा तुम बनके नारी जाओगी।

रोती है चश्मे 'फरीदी' देखकर अंजामे बद
गर न संभलोगी तो लेने सिर्फ ख़्वारी जाओगी।

Tehseeni Foundation

ईसाले
सवाब का बेहतरीन ज़रिया

मरहूमीन के ईसाले सवाब के ज़रियों में से एक बेहतरीन ज़रिया दीनी किताबों को तक़सीम करना भी है। अपने मरहूमीन को सवाब पहुंचाने के लिये दीनी किताबें ख़रीद कर तक़सीम करें। इसके लिये आप तहसीनी फ़ाउन्डेशन से राब्ता कर सकते हैं।

इस्लामी चैनल

तहसीनी फ़ाउन्डेशन की जानिब से यूट्यूब पर एक इस्लामी चैनल चलाया जाता है जिस पर रोज़ाना इस्लामी वीडियोज़ अपलोड की जाती हैं। आप उस चैनल को खुद भी सब्सक्राइब करें और दूसरों को भी करायें।

/TehseeniFoundation

आप हमें दूसरे सोशल मीडिया अकाउन्ट्स पर भी फॉलो करें।

/TehseeniFoundation